International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 08-09-2021, Accepted: 24-09-2021, Published: 09-10-2021
Volume 7; Issue 5; 2021; Page No. 87-91

भारतीय इतिहास में पर्यटन परम्परा का अध्ययन (प्रारंभ से 2000 ईसवीं तक)

Dr. Surbhi Singh
Dean, Department of Art, Sarvepalli Radhakrishnan University, Bhopal, Madhaya Pradesh, India

सारांश
भारत दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है। लगभग 4000 वर्षों के भारतीय सभ्यता के इतिहास में समृद्ध विरासत और अतीत से कई संबंध हैं। भारत की गौरवशाली परंपराएं और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का पर्यटन के विकास से गहरा संबंध है। इसके शानदार स्मारक दुनिया भर से बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। प्राकृतिक परिवेश, वास्तुकला की उत्कृष्ट कृतियाँ, संगीत, नृत्य, पेंटिंग, रीति–रिवाज और भाषाएँ ये सभी भारत को पर्यटकों के लिए स्वर्ग बनाने के लिए जाते हैं। भारत, भौगोलिक विविधता की भूमि, समृद्ध सभ्यता और संस्कृति के एक लंबे इतिहास के साथ धन्य है। यह सुंदर समुद्र तटों, हिल स्टेशनों, दृश्यों, किलों, स्मारकों, मेलों, त्योहारों, कला, शिल्प, संस्कृति, वन, वन्य जीवन और धार्मिक केंद्रों आदि से लेकर विभिन्न प्रकार के आकर्षण के साथ एक संभावित पर्यटन स्वर्ग है। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक अक्सर देश की समृद्ध और गौरवशाली विरासत की तलाश में आकर्षित होते हैं। वास्तव में, यह कहा जा सकता है कि भारत में पर्यटन के अन्य सभी रूप सांस्कृतिक पर्यटन की देन हैं। इसीलिए प्रस्तुत शोधपत्र में शोधकर्ता द्वारा भारतीय इतिहास में पर्यटन परम्परा का अध्ययन किया गया है।

मूलशब्दः भारतीय इतिहास, पर्यटन, संस्कृति, परम्परा

प्रस्तावना
भारत की एक समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा है। भारतीय संस्कृति में कला, धर्म और दर्शन का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण है। वे भारतीय जीवन शैली के ताने–बाने में इतनी खूबसूरती से गुंथे हुए हैं और अविभाज्य हैं। भारतीय लोग स्वभाव से सहिष्णु हैं और भारतीयों ने कभी भी विदेशी सभ्यता की परंपराओं का उपहास नहीं किया। दूसरी ओर, भारतीयों ने अन्य संस्कृतियों की बहुत सारी सोच को आत्मसात कर लिया है, इस प्रकार अपने चरित्र में अद्वितीय बनकर इसे समृद्ध किया है। यह वह विशिष्टता है जो पश्चिमी समाजों को भारतीय संस्कृति की ओर आकर्षित करती है। अपने भौतिकवादी जीवन से मोहभंग हो जाने पर, वे शान्ति के लिए भारत की ओर रुख करते हैं। भारत अपनी विविध जलवायु विशेषताओं और विरासत संस्कृतियों के लिए हर साल बड़ी संख्या में आगंतुकों के साथ दुनिया के पर्यटन स्थलों को बढ़ावा देने में से एक बन गया है। पिछले 25 वर्षों में इसने पर्यटन का तीव्रता से विकास किया है और यह सबसे उल्लेखनीय कारकों में से एक है जिसने आर्थिक परिवर्तन लाए। भारत एकमात्र ऐसा देश है जो विभिन्न प्रकार के पर्यटन प्रदान करता है। भारत सरकार ने पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अलग–अलग तरीके अपनाए हैं। भारत सरकार ने भारत को अंतिम पर्यटन स्थल के रूप में पेश करके पर्यटन उद्योग क्षेत्र से राजस्व बढ़ाने का निर्णय लिया।
साथ ही हमें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि आधुनिक भारत किसी भी स्तर पर अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को हमारे प्राचीन संतों, दार्शनिकों और संतों की विरासत को न भूलें। संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस और रूस में भारत के त्योहारों को जिस सफलता के साथ मनाया जाता है, वह हमारी सांस्कृतिक परंपराओं में विदेशियों की रुचि को साबित करता है। हमारी लोक कलाओं, संगीत और नृत्य में रुचि के पुनरुद्धार को बढ़ावा देने के सरकार के प्रयासों को जबरदस्त सार्वजनिक प्रतिक्रिया मिली है।

पर्यटन का अर्थ एवं परिभाषा
मनोरंजन के लिए, रुचि के स्थानों पर जाने के लिए, ज्ञान लेने के लिए, आने–जाने में प्राकृतिक सौंदर्य वाले स्थानों पर जाने को पर्यटन के रूप में जाना जाता है। पर्यटन, यात्रा और अजनबियों के ठहरने से उत्पन्न होने वाले संबंध और घटना की समग्रता है, बशर्ते कि ठहरने से स्थायी निवास की स्थापना न हो और वह पारिश्रमिक गतिविधि से जुड़ा न हो।

जीफर के अनुसार
पर्यटन में दृश्यों और इसके जंगली पौधों और जानवरों के साथ–साथ इन क्षेत्रों में पाए जाने वाले किसी भी मौजूदा सांस्कृतिक पहलुओं का अध्ययन, प्रशंसा और आनंद लेने की विशिष्ट वस्तु के साथ अपेक्षाकृत कम या बिना पढ़े–लिखे प्राकृतिक क्षेत्रों की यात्रा करना शामिल है।

पर्यटन लोगों के काम और निवास के अपने सामान्य स्थान के बाहर गंतव्य के लिए अस्थायी आंदोलन है।

पर्यटन के प्रकार
1997 में संयुक्त राष्ट्र ने पर्यटन को तीन प्रकारश्रेणियों में वर्गीकृत किया

- **घरेलू पर्यटन (Domestic Tourism):** घरेलू पर्यटन में अपने ही देश के निवासी आते हैं। इस तरह की यात्रा में किसी भी औपचारिकता की आवश्यकता नहीं होती है।
- **अंतर्गामी पर्यटन (Inbound tourism):** अंतर्गामी पर्यटन में देश के अन्य विकल्पों की यात्रा करने वाले गैर–निवासी शामिल हैं। जैसे अंग्रेजधविदेशी भारत आ रहे हैं।
- **दूसरे देश का पर्यटन (Outbound tourism):** दूसरे देश का पर्यटन में एक देश के निवासी दूसरे विदेशी देश की यात्रा करते हैं। जैसे ऑस्ट्रेलिया जाने वाले भारतीय।

संबंधित साहित्य की समीक्षा (Review of Litrature)
साहित्य सर्वेक्षण से पता चलता है कि विकसित और विकासशील दोनों देशों में से अधिकांश देशों ने आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में पर्यटन को एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में स्थापित किया है। बहुत से लोग सोचते हैं कि सभी उपलब्ध

संसाधन हमारे उपयोग के लिए ही हैं। लेकिन हम इन संसाधनों के केवल रखवाले हैं। इसलिए इन सभी विरासतों को आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित करना हमारा कर्तव्य और जिम्मेदारी है।

प्रो. के.एस. नागपति नेः पर्यटन विकास को एक नए दृष्टिकोण, संस्कृति, सूचना और संचार प्रणाली के रूप में देखा है। इनके अनुसार यात्रा बाजार के कुछ खंड का वर्णन करने के लिए सांस्कृतिक पर्यटन का अक्सर उपयोग किया जाता है। यह ऐतिहासिक, कलात्मक और विरासत के आकर्षण की यात्रा से जुड़ा हो सकता है। सांस्कृतिक पर्यटन में अनिवार्य रूप से सांस्कृतिक प्रेरणाओं जैसे अध्ययन दौरे, मेलों और त्योहारों की यात्रा, और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों, स्थलों और स्मारकों के दौरे, लोकगीत कला और तीर्थयात्रा शामिल हैं।

प्रवीण सेठी के अनुसार

19वीं शताब्दी के अंत तक थॉमस कुक की मिस्र के प्राचीन ऐतिहासिक स्मारकों को देखने के लिए पहली छुट्टियों के साथ पैकेज्ड हेरिटेज टूरिज्म की शुरुआत हुई। पर्यटन, सरकार का एक उपकरण बन गया है, ऐतिहासिक के साथ क्षेत्रीय और आर्थिक नीति को संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन में पर्यटकों के आकर्षण के रूप में विकसित किया जा रहा है और पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए ग्रामीण परंपराओं का उपयोग किया जा रहा है।

नेशनल ट्रस्ट और इंग्लिश हेरिटेज प्रॉपर्टीज में लाइव थिएटर प्रदर्शन और फ्रांस में पिरामिड या रोमन थिएटर के बीच ओपेरा प्रदर्शन जैसे नए पर्यटक आकर्षण बनाने के लिए कला और विरासत को जोड़ने के लिए उन कस्बों या शहर के केंद्रों के पर्यावरण को संरक्षित करने और बढ़ाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं जो उन्हें आकर्षक विरासत स्थल बनाता है।

वरुण नाइक के अनुसार

ाारत की सांस्कृतिक विरासत में बौद्धिक जिज्ञासा के पुनरुद्धार के लिए कुछ हद तक अंग्रेज जिम्मेदार थे। भारत के अतीत की कहानी और देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में गहरी दिलचस्पी ली गई।

डॉ. बी.आर. परिणीता के अनुसार

भारत में इतिहास और पर्यटन के सर्वेक्षण में डॉ. ई.आर ऑलचिन द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट की सिफारिशों से पता चला कि 54ः पर्यटकों ने भारत में अपने प्रवास का आनंद लिया। वे इन स्मारकीय विरासत के पहलूओं में रुचि रखते थे और मुख्य रूप से यूरोप और अमेरिका से थे । लगभग 48.3ः पर्यटकों ने महसूस किया कि उनमें निर्मित सुंदर और प्राकृतिक दृश्य भारत आने की इच्छा रखते हैं। सर्वेक्षण रिपोर्टों के अनुसार कई विदेशी आगंतुकों को भारत में नर्तकियों और गायकों के प्रदर्शन को देखने का अवसर मिलने पर खुशी होगी । अंत में डॉ. ऑलचिन ने अपनी रिपोर्ट में कहा, भारत एक महान अतीत और महान परंपरा वाला एक बड़ी आबादी वाला देश है।

शोध उद्देष्य (Objective of Research)

प्रस्तुत शोध के प्रमुख उद्देष्य निम्नलिखित हैः भारतीय इतिहास में पर्यटन परम्परा का अध्ययन

1. पर्यटन के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
2. भारतीय इतिहास में पर्यटन परम्परा का अध्ययन करना।

शोध प्रणाली (Research Methodology)

प्रस्तुत शोधपत्र द्वितीयक डेटा विश्लेषण प्रणाली पर आधारित है। यह लेख विशुद्ध रूप से वर्णनात्मक है। इसमें द्वितीयक स्रोतों जैसे– पत्रिकाओं, संस्कृति और विरासत से संबंधित अन्य प्रकाशनों से आवश्यक जानकारी एकत्र की गई है।

भारतीय इतिहास में पर्यटन परम्परा का प्रारंभ

प्राचीन भारत में, चंद्रगुप्त–द्वितीय की अवधि में यात्रा करने के लिए कोई यात्रा औपचारिकताएं नहीं थीं, और उस समय प्रसिद्ध चीनी तीर्थयात्री फाह्यान ने बिना पासपोर्ट के यात्रा की थी। लेकिन तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में, सभी यात्रियों के लिए, कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार, पासपोर्ट या मुद्रा आवश्यक थी। वैदिक काल में पर्यटकों को देश के पवित्र स्थान धामों में ठहराया जाता था। वास्को–डी–गामा द्वारा नए समुद्री मार्ग की खोज के परिणामस्वरूप भारत आने वाले यात्रियों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। जब सिकंदर महान भारत पहुंचा, तो उसने पेड़ों और कुओं और विश्राम गृहों से सजी सड़कों को अच्छी तरह से देखा। 1920 किमी लंबे और 19 मीटर चौड़े शाही राजमार्ग के साथ, पुरुषों ने रथों, पालकियों, बैलगाड़ियों, गधों, घोड़ों, ऊंटों और हाथियों पर यात्रा की।

प्रारंभिक काल में पर्यटन

प्रारंभिक दिनों में, तीर्थयात्रा या तीर्थ यात्रा का बहुत महत्व था। अशोक महान, ने प्रसार करने की अपनी उत्सुकता में बहुत यात्राएं कीं। अपनी पूरी यात्रा के दौरान, पाटलिपुत्र से लुम्बिनी तक कपिलवस्तु और सारनाथ और अंत में गया तक सम्राट अशोक ने प्रत्येक स्थान पर विशेष स्मारक स्थापित किए और यात्रियों के विश्राम गृह भी बनाए गए। जहां पर्यटक आराम कर सकते थे। सड़क के किनारे पेड़ लगाए गए ताकि यात्रियों का कड़ी धूप से बचाव होगा। हर्ष एक और महान सम्राट थे जिन्होंने बौद्ध धर्मग्रंथों से प्रभावित होकर संस्थाओं का निर्माण किया और यात्रियों के लिए धर्मशाला, विश्राम गृह गांव और नगरों में बनाए तथा तीर्थयात्रियों के लिए कई मठ भी बनाए। इससे पता चलता है कि उस काल में यात्रा सुविधाओं में काफी सुधार हुआ था।

बौद्ध संघ ने तीर्थयात्रा की परंपरा की स्थापना की, जब साधु गाँव–गाँव जाते थे और दरबार में मूल्यों का उपदेश देते थे।यात्रियों के लिए विश्राम गृह की व्यवस्था की गई थी। मठों ने भी भिक्षुओं, और आम लोगों को आकर्षित किया। अर्थशास्त्र, व्यापारियों को दी गई सुरक्षा को दर्शाता है। माल के लिए बीमा और सुरक्षित मार्ग, विनियमन कीमतों, बाटों और मापों और सोने, चांदी और तांबे के उपयोग के रूप में किया जाता था।

विनिमय की दरें व्यापार और यात्रा के एक सुविकसित तरीके का भी संकेत देती हैं। भारत आने वाले पहले विदेशियों में से कुछ शायद फारसी थे। वहां शिलालेखों में भारत आने वाले फारसियों के कारवां का बहुत प्रमाण है। फारसियों के राजा दारा की लगान का भी उल्लेख है। फारस और भारत के बीच व्यापार, वाणिज्य और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के दौरान चंद्रगुप्त मौर्य की लगान, फारसी रीति–रिवाजों का पालन किया गया है। ह्वेन–त्सांग, एक धर्मनिष्ठ चीनी बौद्ध ने भारत की यात्रा की 633 ई. में भारत की उनकी यात्रा कठिन और जोखिम भरी थी। प्राचीन बौद्ध धर्मग्रंथों का संग्रह और अनुवाद उनका मिशन था ।

ग्रीक खाते पता चलता है कि भारत में, रथ सड़कों को अच्छी तरह से तैयार किया गया था और घोड़े, हाथी और ऊंट परिवहन का एक सामान्य साधन था। छाया, कुओं, विश्राम के लिए पेड़ घरों और सुरक्षा की भी अच्छी व्यवस्था की गई थी। उद्भव के कारण इस युग के सबसे महत्वपूर्ण विकासों में से एक निवास स्थान, व्यापार और वाणिज्य का संचार का उदय था

जब सिकंदर महान भारत पहुंचा, तो कहा जाता है कि वह अच्छी सड़कें मिलीं जो छायादार पेड़ों से ढकी हुई थीं। मार्को पोलो एक और महान यात्री थे जो 13वीं शताब्दी में गुजरे थे। भारत के रास्ते में चीन के सभी यात्री बहुत खुष थे। उनकी दिलचस्पी

भारत और उसकी कल्पित दौलत को अपने लिए देखने में थी। यह साबित करता है कि भारत उन दिनों एक समृद्ध और समृद्ध देश था।

आधुनिक काल में पर्यटन

ब्रिटिश काल के दौरान, भारत में पर्यटन अधिक संगठित हो था। डाक यात्रियों की सुविधा के लिए उन्होंने सड़क किनारे डाक बंगले बनवाए गए। भारत के बेहतरीन व्यंजन अपनी सभ्यता की तरह ही समृद्ध और विविध हैं। संस्कृत साहित्य में तीन प्रसिद्ध शब्द अतिथि देवो भव का अर्थ है अतिथि वास्तव में भगवान है। भारत कला, चित्रों का भंडार है। तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के रूप में सिंधु घाटी सभ्यता में पाए गए बर्तनों पर शिल्प, अजंता और एलोरा के गुफा चित्र 1 से 5 वीं शताब्दी ईस्वी पूर्व के हैं अंग्रेजों ने 19 वीं शताब्दी में भारत के पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना की थी। देश में उपलब्ध सामग्री को भारतीय कला और संस्कृति को सदी की विरासत के अभिन्न अंग के रूप में देखा गया।

भारत के पास कई विरासतों में से एक है विश्व की सबसे समृद्ध प्राकृतिक विरासत

जीवों की 65,000 प्रजातियां जिनमें 350 स्तनधारी (दुनिया के कुल का 7.6 प्रतिशत), सरीसृपों की 408 (6.2 प्रतिशत), उभयचरों की 197 (4.4 प्रतिशत), पक्षियों की 1244 (12.6 प्रतिशत) शामिल हैं। प्रतिशत), 2546 मछलियाँ (11.7 प्रतिशत) और साथ ही वनस्पतियों की 15000 प्रजातियाँ (6 प्रतिशत) पर्यटन के विकास के लिए पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। भारत के जंगल, नदियाँ, नदियाँ समृद्ध वन्य जीवन से भरी हुई हैं। भारत में 80 राष्ट्रीय उद्यान और 441 अभयारण्य हैं। एशिया में सबसे बड़ा वन्यजीव अभयारण्य अर्थात। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान–मध्य प्रदेश (बाघ परियोजना), जिम कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान (उत्तर प्रदेश) गिर (गुजरात) (शेर), रणथंभौर (राजस्थान) (मोर), काजीरंगा (असम) (रिहनोसार), बांदीपुर (कर्नाटक) आदि।

मंदिर

भारत अमृतसर, त्रिपति बालाजी, मथुरा, अयोध्या, बद्रीनाथ, हरिद्वार और ऋषिकेश में प्रसिद्व मंदिर हैं। उत्तर में शिमला, कुल्लू, मनाली और मसूरी, पूर्व में शिलिंग और दार्जिलिंग, दक्षिण में ऊटी, कोडाइकनाल और मुन्नार और मध्य में महाबलेश्वर, माथेरान, चिकलदरा और अंबोली जैसे हिल स्टेशन हैं। ये सभी पर्यटन स्थल सर्वाधिक लोकप्रिय हैं, जो बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

भारत के पर्यटन संगठन की शुरुआत

भारत के पर्यटन संगठन की शुरुआत वर्ष 1945 से हुई थी। 1945 में सर जॉन सार्जेंट, शैक्षिक सलाहकार और भारत सरकार की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की गई थी। सार्जेंट समिति ने अक्टूबर 1946 में अपनी अंतरिम रिपोर्ट प्रस्तुत की, लेकिन इस समिति द्वारा दिए गए सुझावों का निहितार्थ स्वतंत्रता के बाद लागू किया गया। सार्जेंट समिति की रिपोर्ट के अनुसार, पर्यटक यातायात समिति की नियुक्ति 1948 में की गई थी। सिफारिश पर 1949 में कोलकाता और चेन्नई में क्षेत्रीय कार्यालयों के साथ एक पर्यटक यातायात शाखा की स्थापना की गई थी। पर्यटक यातायात शाखा का 1955–56 में एक शाखा से चार शाखाओं तक विस्तार किया गया और उन्हें एक कार्य सौंप दिया गया अर्थात 1) पर्यटक यातायात 2) पर्यटक प्रशासन 3) पर्यटक विज्ञापन 4) वितरण अनुभाग।

1 मार्च 1958 को परिवहन और संचार मंत्रालय के तहत एक पर्यटक यातायात शाखा के स्थान पर एक अलग पर्यटन विभाग बनाया गया जो आवास, भोजन सुविधा, आतिथ्य आदि जैसी सेवाएं प्रदान करता है। 1960 की शुरुआत में प्ज्क्ब् (इंडिया टूरिज्म डेवलपमेंट कॉरपोरेशन) अंतर्राष्ट्रीय आगंतुकों को पश्चिमी आराम प्रदान करने के लिए शुरू किया गया था। आईटीडीसी एक आधुनिक अधिरचना के विकास में उत्प्रेरक के रूप में एक प्रमुख भूमिका निभाई (उदाहरण के लिए, अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए अशोका समूह के होटल)। सरकार सेट एअर इंडिया और पर्यटन की स्थापना करके पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए बुनियादी ढांचा तैयार किया गया। मंत्रालय में पर्यटन प्रकोष्ठ एविएशन को एक विभाग में अपग्रेड किया गया था। निजी क्षेत्र को आमंत्रित किया गया था। अधिक खर्च करने वाले पर्यटकों के लिए विलासिता सुविधाएं स्थापित की गईं। इस क्षेत्र में पहले अग्रणी मोहन सिंह ओबेरॉय थे, जिन्होंने शिमला में क्लार्क्स होटल और कलकत्ता में ग्रांड होटल के साथ अपना करियर शुरू किया।

भारत में पर्यटन की प्रगति
(उत्तरोत्तर पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से विकास)

यद्यपि 50 साल पहले स्वतंत्र भारत में पर्यटन गतिविधि एक अच्छी मात्रा थी जब पर्यटन एक विषय के रूप में शामिल नहीं था। भारत का संविधान में सिवाय इसके कि केंद्र या राज्य सूची के कुछ घटकों में इसका उल्लेख किया गया था। प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान पर्यटन के लिए आवंटन भी नहीं था।

पंचवर्षीय योजना (1956–61)

केंद्र और राज्य दोनों के लिए पर्यटन योजना का एक घटक बन गया। 3.36 करोड़ रुपये के टोकन आवंटन के साथ प्रक्रिया क्षेत्रों को एक साथ रखा। दूसरी योजना के दौरान मुख्य रूप से महत्वपूर्ण पर्यटन केंद्रों में पृथक सुविधाएं बनाने पर विकास का दृ ष्टिकोण था। तीसरा योजना में स्थापना द्वारा गतिविधियों के विकास के लिए एक युग की शुरुआत देखी गई। कश्मीर के गुलमर्ग में एक शीतकालीन खेल परिसर का आयोजन किया गया। भारत पर्यटन विकास निगम (ITDC) की स्थापना 1966 में पर्यटन को विकसित करने के लिए की गई थी जिसका उद्देश्य बुनियादी ढांचे और भारत को एक पर्यटन स्थल के रूप में बढ़ावा देना था। चौथी और पांचवीं योजना के दौरान गंतव्य यातायात को बढ़ावा देने की दृष्टि से पर्यटन सुविधाओं में सुधार पारगमन यातायात के रूप में दृष्टिकोण में विस्तार था और चयनित पर्यटकों का एकीकृत विकास कोवलम, गुलमर्ग, गोवा, कुल्लू–मनाली आदि केंद्रों ने बहुत कुछ प्राप्त किया ध्यान दिया। भारत में रिसॉर्ट पर्यटन के प्रतीकात्मक मॉडल बन गए सांस्कृतिक बौद्ध केंद्रों के विकास के साथ पर्यटन पर जोर दिया गया और मास्टर प्लान के माध्यम से भारत में विरासत स्मारक इनाए गए।

मार्च 1963 में लालकृष्ण झा की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की गई। इस समिति ने भारत में पर्यटन प्रवाह में सुधार के लिए विशेष रूप से सुविधा के संबंध में कई सिफारिशें कीं। 1965 में तीन नए निगम स्थापित किए गए, अर्थात। होटल कॉर्पोरेशन, इंडियन टूरिज्म और इंडिया टूरिस्ट ट्रैफिक कॉर्पोरेशन। लेकिन उन्होंने अच्छी तरह से काम नहीं किया और इसलिए अक्टूबर, 1966 को इंडिया टूरिज्म डेवलपमेंट कॉरपोरेशन (ITDC) के रूप में एक इकाई बनाने के लिए विलय कर दिया। ITDC पर्यटन और नागरिक उड्डयन मंत्रालय की मुख्य एजेंसी है। जिसने भारत में पर्यटन को बढ़ावा दिया।

छठी योजना (1980–85)

भारतीय इतिहास मेंएक प्रमुख मील का पत्थर था जब देश की पहली पर्यटन नीति की घोषणा की गई। 1982 के दौरान जिसने विकास के उद्देश्यों को निर्दिष्ट किया और पर्यटन के लाभों को अधिकतम करने के लिए ट्रैवल सर्किट अवधारणा पर आधारित

कार्य योजना के दौरान पर्यटन के विकास को एक उद्देश्य आणारित योजना का रूप प्रदान किया

सातवीं पंचवर्षीय योजना (1985–90)

इस क्षेत्र को एक उद्योग का दर्जा दिया गया था। इस प्रकार यह भारतीय पर्यटन के लिए वाटरशेड योजना बन गई। 1986 में मूल्यांकन करने के लिए भारत में पर्यटन की आर्थिक और सामाजिक प्रासंगिकता और एक लंबी अवधि तैयार करने के लिए पर्यटन के त्वरित विकास को सुनिश्चित करने के उपाय के लिए सरकार द्वारा पर्यटन पर राष्ट्रीय समिति स्थापितकी गई । इनके आधार पर पर्यटन के लिए प्रोत्साहन पैकेज उपलब्ध कराने की अनुशंसा और भारतीय पर्यटन वित्त निगम (TFCI) की स्थापना की गई थी।

आठवीं योजना (1992–97)

पर्यटन के लिए विकास योजना थी। 5 मई, 1992 पर्यटन के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना पर आधारित विधेयक संसद में प्रस्तुत किया गया को। इसने पर्यटन उत्पाद के विविधीकरण को प्राप्त करने का प्रस्ताव रखा। इसका उद्वेष्य पर्यटन के लिए, पर्यटन बुनियादी ढांचे का त्वरित विकास, प्रभावी विपणन और विदेशी बाजारों में प्रचार के प्रयास और सभी बाधाओं को दूर करना था। गतिविधियों को सूचीबद्ध करने वाला पर्यटन सिनर्जी कार्यक्रम और विभिन्न एजेंसियों द्वारा प्रदान किए जाने वाले बुनियादी ढांचे के घटक जिनमें निजी क्षेत्र और राज्य सरकारें शामिल हैं। इस प्रकार 1993 में तैयार किया गया था जिसे आगे संशोधित किया गया और इसे राष्ट्रीय रणनीति के रूप में परिवर्तित किया गया।

1996 के दौरान पर्यटन का विकास

पर्यटन के महत्व का अधिक से अधिक अहसास प्राप्त करना, इस पर आम सहमति विकास की जरूरतें, सभी बुनियादी ढांचे का सकारात्मक योगदान समन्वित तरीके से विभाग, उच्च योजना आवंटन और परिचय पर्यटन के त्वरित विकास के लिए नई योजनाओं की शुरुआत करना। पर्यटन विभाग ने इसके लिए विशेष टास्क फोर्स का भी गठन किया। उत्तर में पर्यटन के विकास के लिए योजनाओंध्परियोजनाओं को बढ़ावा देना पूर्वी राज्य, सिक्किम, जम्मू–कश्मीर, अरुणाचल प्रदेश और उत्तर के पहाड़ी जिले प्रदेश और पश्चिम बंगाल, विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ संबंधित राज्य सरकारों और उद्योग के प्रतिनिधियों ने इनका दौरा किया। उत्तर पूर्वी राज्यों, जम्मू और कश्मीर के लिए क्षेत्र और कार्य योजनाएँ थीं। विदेशी मुद्रा आय, रोजगार को बढ़ावा देने के लिए और पर्यटन गतिविधियों के माध्यम से आय सृजन, विशेषज्ञ गृह की स्थिति थी नौवीं पंचवर्षीय योजना में पर्यटन इकाइयों को प्रदान किया गया। सरकार के लिए भी सार्वजनिक और निजी प्रयासों का प्रभावी समन्वय ताकि भारत में पर्यटन के विकास में तालमेल हासिल किया जा सके। यह सुनिश्चित किया गया कि स्थलों का संरक्षण किया जाए और पर्यावरण का क्षरण न हो।

चुनौतियाँ

भारत सरकार द्वारा पर्यटकों को प्रदान किए जाने वाले उपरोत्तफ सुविधाओं के बावजूद अच्छी तरह से विकसित पर्यटन प्रणाली के समक्ष कई चुनौतियाँ विद्यमान हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं–

- बुनियादी ढांचा का अभाव भारतीय पर्यटन क्षेत्र के लिए एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। पर्यटन से जुड़ी आर्थिक और सामाजिक अवसंरचना, होटल, कनेक्टिविटी, मानव संसाधन स्वास्थ्य सुविधाएँ आदि काफी हद तक भारत में विकसित होने की अवस्था में हैं। इस उदासीनता का मुख्य कारण वित्तीय संसाधनों का अपर्याप्त आवंटन है। गौरतलब है कि 2017–18 के बजट में सरकार ने पर्यटन जैसे एक बड़े क्षेत्र के लिए केवल 1840 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं।
- देश के प्रमुख पर्यटन स्थलों में फैली गंदगी एक अन्य समस्या है। बड़ी संख्या में पश्चिमी देशों के पर्यटक सिर्फ इसलिये भारत आना पसंद नहीं करते क्योंकि यहाँ चारों तरफ गंदगी रहती है।
- पर्यटकों की सुरक्षा विशेष रूप से विदेशी पर्यटकों की, पर्यटन विकास के मार्ग में एक प्रमुख बाधा रही है। विदेशी नागरिकों पर विशेष रूप से महिलाओं पर हमले, दूरदराज के देशों के पर्यटकों के स्वागत के लिए भारत की क्षमता पर कुछ सवाल उठाते हैं।
- देश के अधिकांश पर्यटन स्थलों तक आज भी गरीब, महिला और बुजुर्गों की पहुंच नहीं है। ऐसा यात्र की उच्च लागत, खराब कनेक्टिविटी और विभिन्न कारणों के लिए आवश्यक अनुमतियों की एक शृंखला के कारण होता है।
- भारत को अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को उजागर करने में वैसी सफलता नहीं मिली है जैसा कि पश्चिम के देशों, विशेषकर यूरोपीय देशों को मिली है।
- स्वास्थ्य पर्यटन, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, साहसिक पर्यटन में अपार संभावनाओं के होते हुए भी इन क्षेत्रों पर ध्यान कम दिया गया है।
- हालाँकि योग, प्राकृतिक चिकित्सा और साहसिक पर्यटन में निजी क्षेत्र के लोग अच्छी कमाई कर रहे हैं लेकिन राज्य सरकारें इनको एक सूत्र में बाँधकर लाभ नहीं उठा पाई हैं। कुछ काम तो चल रहे हैं लेकिन बड़ी मंद गति से। मसलन 40 हेलिपैड बनना प्रस्तावित हैं किंतु चंद गिने चुने पर ही काम हो पाया है।
- चारधाम यात्र मार्ग को बीते साल की आपदा के बाद पर्याप्त बजट के बावजूद अभी तक वाहनों के लिए सुविधाजनक नहीं बनाया जा सका है। वही ट्रैकिंग के लिए कई सालों से नए मार्ग नहीं बनाए जा सके हैं आदि।

निष्कर्ष (Conclusion)

भारत महान विविधता का देश है। इसके अनूठे सांस्कृतिक रहस्य, विदेशी विरासत, सौंदर्यपूर्ण वातावरण और उत्कृष्ट प्राकृतिक संसाधनों ने अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित किया है। पर्यटन भारत के एक महत्वपूर्ण उद्योग के रूप में उभरा है। आज पर्यटन विदेशी मुद्रा आय और रोजगार का एक प्रमुख स्रोत है। भारत आउटबाउंड और इनबाउंड पर्यटकों के लिए पर्यटन का एक बड़ा बाजार है।

पर्यटन आज दुनिया का सबसे बड़ा उद्योग बन गया है। इस मामले में भारत की प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर, उसे पर्यटन की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण क्षेत्र बनाती है। आज भारत विभिन्न श्रेणी के पर्यटन के लिए जाना जाता है, जैसे कि साहसिक पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, आदि।

भारत में कश्मीर से कन्याकुमारी तक, अरुणाचल प्रदेश से गुजरात तक के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्टता और संस्कृति है। ये क्षेत्र अपने ठंडध्गर्म रेगिस्तान (लद्दाख ६ राजस्थान), नदियों (गंगा और ब्रह्मपुत्र), वन (निलिगिरि और उत्तर पूर्व), द्वीपों (अंडमान और निकोबार), पर्वत व पठारों आदि प्राकृतिक विशेषताओं से पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता रखते हैं। साथ ही यहाँ के परिदृश्य में पाये जाने वाले व्यापक विविधता और सांस्कृतिक विरासत विदेश से आने वाले पर्यटकों के लिए कई विकल्प प्रदान कर रहे हैं। आज भी विश्व के कुछ देशों में (जैसे–श्रीलंका, नेपाल, भूटान, म्यांमार आदि) जहाँ हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म के अनुयायी बड़ी संख्या में रहते हैं। गौरतलब है कि इन धर्मों के प्रवर्त्तक का जन्मस्थली होने के

कारण बड़ी संख्या में यहाँ पवित्र और धर्मिक पर्यटन स्थल हैं, जिससे दक्षिण पूर्व और पूर्वी एशियाई देशों के पर्यटक काफी संख्या में आकर्षित हो रहे हैं।

सुझाव

पर्यटन क्षेत्र में विकास के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं। वर्तमान में पर्यटन से जुड़ी चुनौतियों से निपटने के लिए निम्नलिखित कुछ प्रमुख सुझावों को अमल में लाया जा सकता है

- सरकार को पर्यटन क्षेत्र के समस्त विकास के लिए समावेशी विकास के मुख्य चालक के रूप में कार्य करने की क्षमता वाले निजी क्षेत्र की भागीदारी को एक बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित करना चाहिए।
- केंद्र एवं राज्य सरकारों के अलावा निजी क्षेत्र के बीच बेहतर जुड़ाव की जरूरत है। इन सबसे बढ़कर पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
- 'यह अच्छा संकेत है कि मौजूदा सरकार ने 2014 में ही इसकी संभावनाएं पहचानकर पांच वर्षों के दौरान इस मोर्चे पर काफी काम किया है, जिसे निरंतर गति देना आवश्यक है।
- अतुल्य भारत' और 'अतिथि देवो भवः' जैसे स्लोगनों को व्यापक योजनाओं के साथ प्रचारित करना चाहिए। इसके तहत बड़ी संख्या में किफायती होटलों का निर्माण, मनोरंजन के लिए भी नये किस्म के विकल्प तैयार किये जाने चाहिए।
- अधिक–से–अधिक पर्यटकों को आकर्षित करने के लिये एडवेंचर टूरिज्म (Adventure Tourism) पर भी फोकस किया जाना चाहिए।
- पर्यटन विकास के मामले में देश के कुछ राज्यों को छोड़कर अन्य राज्यों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। ऐसे में पर्यटन के जरिए आर्थिक विकास को गति देने वाले राज्यों से सबक लिया जाना चाहिए।
- पर्यटन के पुराने केंद्र ही राज्यों की आय का माध्यम बने हैं, जबकि अपार संभावनाओं वाले पर्यटन स्थल आज भी पर्यटकों की जानकारी में नहीं हैं। यदि उत्तराखंड का आकलन किया जाए तो पर्यटन के मामले में राज्य ने पिछले दस वर्ष में कोई खास उपलब्धि हासिल नहीं की है। जबकि राज्य में बहुआयामी पर्यटन की संभावनाएँ मौजूद हैं। इसको लेकर योजना बनायी जानी चाहिए।
- उड़ान (UDAN) योजना को ज्यादा से ज्यादा हवाई अड्डों तक बढ़ाया जाना चाहिए। इसके लिए निजी क्षेत्र को इसे बेहतर बनाने में मदद करनी चाहिए।
- सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India & AS) की सहायता से अपने धरोहर स्थलों के लिये प्रस्ताव बनाते समय यूनेस्को (UNESCO) के मानकों का पालन सुनिश्चित करना चाहिए।
- राज्य सरकार को चाहिए कि वह हर वर्ष अपने यहाँ पर्यटकों के बढ़ रहे रुझानों को देखते हुए अपने सभी स्थलों को चरणबद्ध तरीके से विकसित करें और अपने स्तर पर निधि भी जुटाए।
- महानगरों से पर्यटन स्थलों तक कनेक्टिविटी हमारी पर्यटन संख्या को दोगुना करने और समग्र विकास में योगदान देने में काफी कारगर हो सकती है। ऐसे में इसे बढ़ाया जाना चाहिए। साथ ही धार्मिक स्थलों को पर्यटन विभाग की वेबसाइट पर अपलोड किया जाना चाहिए।
- इसके अलावा सरकार को विश्व में भारतीय योग, चिकित्सा, संस्कृति, विचारधारा, दुर्गम क्षेत्रों जैसे–पर्वत, पठार, झील नदियों आदि की सुंदरता से विश्व को अवगत कराना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. के.एस नागपति (2012) पर्यटन विकास एक नया दृष्टिकोण, प्रतीक्षा प्रकाशन
2. प्रवीण सेठी (1999) विरासत पर्यटन, अनमोल प्रकाशन
3. भारतीय संस्कृति, परंपरा और विरासत पर जानकारी www-cultureindia-net
4. डॉ. गौतम हेजरा एनालिसिसि ऑफ आर्ट, कल्चर एंड हेरिटेज, इंडियन टूरिज्मरू वर्तमान और भविष्य का परिदृश्य
5. डॉ. बी.आर परिणीता (2005), हिस्ट्री एंड टूरिज्म इन इंडिया, यूनाइटेड पब्लिकेशन्स
6. यूरोपीय क्षेत्रों की यूरोपीय संघ समिति, यूरोपीय क्षेत्रों के बीच सामंजस्य के कारक के रूप में सतत पर्यटन। बेल्जियम, यूरोपीय समुदाय (2006)
7. ऐतिहासिक संरक्षण के लिए राष्ट्रीय ट्रस्ट, विरासत पर्यटन (2014)। http://www-preservationnationorg/information &center/Economics&of&revitalization/heritagetourism से एक्सेस किया गया । (29 अगस्त 2014)
8. पी.वी जोशी, सतत विकास के लिए सांस्कृतिक–विरासत पर्यटन की योजना बनाना। गोल्डन रिसर्च थाट्स, (2012)